Bismillah Sharif Ki Barkaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 181
Weekly Booklet : 181

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकतें

सफ़हात 20

- कफ़न पर लिखने का तरीक़ा 02
- जिन्नात से सामान की हिफ़ाज़त का तरीक़ा 11
- बिस्मिल्लाह'' से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई मसाइल 16
- बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है ? 17

येह रिसाला शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी की किताब ''मदनी पन्ज सूरह'' और कुछ नए मवाद के इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकतें**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकतें

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला **"बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकतें"** पढ़ या सुन ले उसे जहां पढ़ना मन्अ़ न हो ऐसे हर काम से पेहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ने की सआ़दत इनायत फ़रमा और उस से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर सो (100) मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शुहदा** के साथ रखेगा।" (مجمع الزوائد، 253/10، حدیث:17298)

मुश्किलें उन की ह़ल हुईं, क़िस्मतें उन की खुल गईं विर्द जिन्हों ने कर लिया صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ाब से ह़िफ़ाज़त की ह़िकायत

फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **"दुर्रे मुख़्तार"** में है, एक शख़्स ने मरने से पहले येह वसिय्यत की, कि इन्तिक़ाल के बा'द मेरे सीने और पेशानी पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिख देना। चुनान्चे ऐसा ही

किया गया। फिर किसी ने ख़्वाब में उस शख़्स को देख कर हाल पूछा। उस ने बताया कि जब मुझे क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए, जब पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ देखी तो कहा, तू अ़ज़ाब से बच गया ! (اَلدُّرُّ الْمُخْتَار مَعَہ رَدُّ الْمُحْتَار، ج۳ص۱۵۶)

कफ़न पर लिखने का त़रीक़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी कोई मुसल्मान फ़ौत हो जाए तो بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم वग़ैरा ज़रूर लिख लिया करें। आप की थोड़ी सी तवज्जोह बेचारे मरने वाले की बख़्शिश का ज़रीआ़ बन सकती है। और मय्यित के साथ हमदर्दी की नेकी आप की भी नजात का बाइ़स बन सकती है। ह़ज़रते अ़ल्लामा शामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : यूं भी हो सकता है कि मय्यित की पेशानी पर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم लिखिये और सीने पर لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखिये। मगर नहलाने के बा'द और कफ़न पहनाने से पहले कलिमे की उंगली से लिखिये, रोशनाई (INK) से न लिखिये। (ردالمحتار ج۳ص۱۵۷) शजरा या अ़ह्द नामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब त़ाक़ खोद कर उस में रखें बल्कि "**दुर्रे मुख़्तार**" में कफ़न में अ़ह्द नामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़्फ़िरत की उम्मीद है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 108)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह

बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رضی اللہ عنہ ने नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم से بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط (की फ़ज़ीलत) के बारे में पूछा : तो **अल्लाह** के मह़बूब صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : ''येह **अल्लाह** पाक के नामों में से एक नाम है और **अल्लाह** पाक के इस्मे आ'ज़म और इस के दरमियान ऐसा ही कु़र्ब (या'नी नज़्दीकी) है जैसे आंख की सियाही (पुतली) और सफ़ेदी के दरमियान।'' (مستدرک للحاکم، 2/250، حدیث: 2071)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ''इस्मे आ'ज़म'' की बहुत बरकतें हैं, इस्मे आ'ज़म के साथ जो दुआ़ की जाए वोह क़बूल हो जाती है। सरकारे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ के अब्बूजान ह़ज़रते रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़लमा ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ को इस्मे आ'ज़म कहा। सरकारे बग़दाद हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رحمۃ اللہ علیہ से मन्क़ूल है : बिस्मिल्लाह ज़बाने आ़रिफ़ (या'नी **अल्लाह** पाक को पहचानने वाला) से ऐसी है जैसी कलामे ख़ालिक़ से ''कुन।'' (या'नी हो जा।) (अह़सनुल विआ़अ, स. 66)

अधूरा काम

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : ''जो भी अहम काम بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के साथ शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।'' (الدر المنثور، 1/26)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने नेक और जाइज़ कामों में बरकत दाख़िल करने के लिये हमें पहले بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ज़रूर पढ़

लेना चाहिये । खाने खिलाने, पीने पिलाने, रखने उठाने, धोने पकाने, पढ़ने पढ़ाने, चलने (गाड़ी वग़ैरा) चलाने, उठने उठाने, बैठने बिठाने, बत्ती जलाने, पंखा चलाने, दस्तर ख़्वान बिछाने बढ़ाने, बिछोना लपेटने बिछाने, दुकान खोलने, ताला खोलने लगाने, तेल डालने इत्र लगाने, बयान करने ना'त शरीफ़ सुनाने, जूता पहनने, इमामा सजाने, दरवाज़ा खोलने बन्द फ़रमाने, अल ग़रज़ हर जाइज़ काम के शुरूअ़ में (जब कि कोई मानेए़ शरई़ न हो) بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ने की आ़दत बना कर इस की बरकतें लूटना ऐ़न सआ़दत है ।

तू अबदी है तू अज़ली है तेरा नाम अ़लीमो अ़ली है ज़ात तेरी सब से बरतर है या अल्लाहु या अल्लाह

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

''बिस्मिल्लाह'' से क़ुरआने करीम का आग़ाज़ करने की वज्ह

ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : क़ुरआने करीम की इब्तिदा ''बिस्मिल्लाह'' से इस लिये की गई ताकि **अल्लाह** पाक के बन्दे इस की पैरवी करते हुए हर अच्छे काम की इब्तिदा ''बिस्मिल्लाह'' से करें । (صاوی، الفاتحہ، ۱/۱۵) और ह़दीसे पाक में भी (अच्छे और) अहम काम की इब्तिदा ''बिस्मिल्लाह'' से करने की तरग़ीब दी गई है ।

छोड़ दे सारे ग़लत़ रस्मो रवाज सुन्नतों पर चलने का कर अ़ह्द आज
ख़ूब कर ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा दिल मदीना याद से उन की बना

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

''اَعُوْذُبِاللّٰہ'' को ''बिस्मिल्लाह'' से पहले क्यूं पढ़ते हैं ?

मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''اَعُوْذُبِاللّٰہِ'' में बुरे अ़क़ाइद और बुरे आ'माल से परहेज़ है और ''बिस्मिल्लाह'' (में) अच्छे अ़क़ाइद और अच्छे आ'माल वग़ैरा को रब से ह़ासिल करना है तो गोया वोह (या'नी اَعُوْذُبِاللّٰہِ) परहेज़ के लिये था येह (या'नी बिस्मिल्लाह) इ़लाज है और परहेज़ इ़लाज पर मुक़द्दम है (या'नी पहले होता है) पहले बीमारी को दफ़्अ़ करो फिर मुक़व्वियात का इस्ति'माल करो लिहाज़ा اَعُوْذُبِاللّٰہِ पहले पढ़ो और बिस्मिल्लाह बा'द में। (तफ़्सीरे नईमी, 1/29 मुल्तक़त़न ब तग़य्युरे क़लील)

ज़बान जलने से महफ़ूज़ रहेगी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबतों और गुनाहों भरी बातों से रिश्ता तोड़िये और **अल्लाह** पाक की यादों, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'तों से रिश्ता जोड़िये ख़ूब दुरूदो सलाम के लिये ज़बान का इस्ति'माल कीजिये और ख़ूब ख़ूब तिलावते क़ुरआने पाक कीजिये और सवाब का ढेरों ख़ज़ाना ह़ासिल कीजिये। चुनान्चे ''**रूहुल बयान**'' में येह ह़दीसे क़ुदसी है : जिस ने एक बार بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم को अल ह़म्द शरीफ़ के साथ मिला कर (या'नी بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن ख़त्मे सूरह तक) पढ़ा तो तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया, उस की तमाम नेकियां क़बूल फ़रमाईं और उस के

गुनाह मुआफ़ कर दिये और उस की ज़बान को हरगिज़ न जलाऊंगा और उस को अज़ाबे क़ब्र, अज़ाबे नार, अज़ाबे क़ियामत और बड़े ख़ौफ़ से नजात दूंगा। (تفسیر روح البیان ج ۱ ص ۹) मिलाने का मज़ीद वाज़ेह़ त़रीक़ा मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये : بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡ-مِلۡ-حَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ...... सूरत पूरी कीजिये।

रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैत़ां से   तेरे ह़बीब का देता हूं वासित़ा या रब
गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता'दाद   कर अ़फ़्व सह न सकूंगा कोई सज़ा या रब

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد
تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہ ! اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

तीन हज़ार नाम

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** पाक के तीन हज़ार नाम हैं एक हज़ार नाम सिवाए फ़िरिश्तों के कोई नहीं जानता और एक हज़ार नाम सिवाए अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام के किसी को मा'लूम नहीं और तीन सो तौरात में हैं, तीन सो इन्जील में हैं, तीन सो ज़बूर में हैं और निनानवे नाम क़ुरआने करीम में हैं और एक नाम वोह है जिस को सिर्फ़ **अल्लाह** पाक ही जानता है। लेकिन बिस्मिल्लाह में रब्बे करीम के जो तीन नाम आए हैं (**अल्लाह**, रह़मान और रह़ीम) इन तीन में उन तीन हज़ार के मा'ना पाए जाते हैं लिहाज़ा जिस ने इन तीनों नामों से रब्बे करीम को याद किया गोया उस ने तमाम नामों से उस को याद किया। (तफ़्सीरे नईमी, 1/31)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

"बिस्मिल्लाह की बरकत" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ'' के 13 मदनी फूल

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अ़ली رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ शम्सुल मआ़रिफ़ (उर्दू) के सफ़ह़ा 37 पर लिखते हैं : जो बिला नाग़ा (या'नी रोज़ाना) सात दिन तक ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ'' 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े اِنۡ شَآءَاللّٰہ उस की हर ह़ाजत पूरी हो। अब वोह ह़ाजत ख़्वाह किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की। (शम्सुल मआ़रिफ़ (मुतर्जम), स. 37)

(2) जो किसी ज़ालिम के सामने ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ'' 50 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे। (ऐज़न, स. 37)

(3) जो शख़्स तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख़ कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 300 बार और दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े **अल्लाह** पाक उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنۡ شَآءَاللّٰہ एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर (या'नी बड़ा मालदार) हो जाएगा। (ऐज़न, स. 37)

(4) कुन्द ज़ेह्न अगर ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ'' 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ उस का ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए और जो बात सुने याद रहे।

(ऐज़न, स. 37)

(5) अगर क़हत़ साली हो तो ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم'' 61 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ें (फिर दुआ करें) اِنۡ شَآءَ اللّٰہ बारिश होगी । (ऐज़न, स. 37)

(6, 7) ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم'' काग़ज़ पर 35 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) लिख कर घर में लटका दें اِنۡ شَآءَ اللّٰہ शैत़ान का गुज़र न हो और ख़ूब बरकत हो । अगर दुकान में लटकाएं तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہ कारोबार ख़ूब चमके । (ऐज़न, स. 38)

(8) पहली मुह़र्रमुल ह़राम को ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم'' 130 बार लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले) اِنۡ شَآءَ اللّٰہ उ़म्र भर उस को या उस के घर में किसी को कोई बुराई न पहुंचे । (ऐज़न, स. 38)

मस्अला : सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं । इसी त़रह़ किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है । इसी त़रह़ सोने, चांदी और स्टील वग़ैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे **अल्लाह** पाक का मुबारक नाम या कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है । औ़रत सोने चांदी की डिबिया में ता'वीज़ पहन सकती है ।

(9) जिस औ़रत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों वोह ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم'' 61 बार लिख कर (या लिखवा कर) अपने पास

रखे (चाहे तो मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग कर के कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर गले में पहन ले या बाज़ू में बांध ले।) اِنْ شَآءَاللّٰه बच्चे ज़िन्दा रहेंगे। (ऐज़न, स. 38)

(10) घर का दरवाज़ा बन्द करते वक़्त याद कर के ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' पढ़ लीजिये, शैतान (सरकश जिन्नात) घर में दाख़िल न हो सकेंगे। (بخاری،3/591،حدیث:5623)

(11) रात को खाने पीने के बरतन बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर ढक दीजिये, अगर ढकने के लिये कोई चीज़ न हो तो ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' कह कर बरतन के मुंह पर तिन्का वग़ैरा रख दीजिये। (ایضًا)

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि साल में एक रात ऐसी आती है कि उस में वबा (या'नी बीमारी) उतरती है जो बरतन छुपा हुवा नहीं है या मश्क का मुंह बंधा हुवा नहीं है अगर वहां से वोह वबा गुज़रती है तो उस में उतर जाती है। (مسلم،ص1115حدیث:2014)

(12) सोने से क़ब्ल ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' पढ़ कर तीन बार बिस्तर झाड़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه मूज़ियात (या'नी ईज़ा देने वाली चीज़ों) से पनाह हासिल होगी।

(13) कारोबार में जाइज़ लेनदेन के वक़्त या'नी जब किसी से लें तो ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' पढ़ें और जब किसी को दें तो ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' कहें اِنْ شَآءَاللّٰه ! ख़ूब बरकत होगी।

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमें ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم'' की बरकतों से

मालामाल फ़रमा और हर नेक व जाइज़ काम की इब्तिदा में ''بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم'' पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जो है ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से ज़ुल जलाल उस की ग़फ़्लत है उस पर वबालो नकाल

क़ा'रे ग़फ़्लत से हम को ख़ुदाया निकाल हम हों ज़ाकिर तेरे और मज़्कूर तू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

खाने का हिसाब न होगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो खाने के हर निवाले पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ेगा क़ियामत के दिन उस से उस खाने का हिसाब न लिया जाएगा। (بستان العارفین للسمرقندی، ص344)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

"का'बतुल्लाह" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से बिस्मिल्लाह शरीफ़ के 8 अवराद

(1) घर की हिफ़ाज़त के लिये

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''जिस ने अपने घर के बाहरी दरवाज़े (MAIN GATE) पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم लिख लिया वोह (सिर्फ़ दुन्या में) हलाकत से बे ख़ौफ़ हो गया ख़्वाह काफ़िर ही क्यूं न हो, तो भला उस मुसल्मान का क्या आ़लम होगा जो ज़िन्दगी भर अपने दिल के आबगीने पर इस को लिखे हुए होता है।'' (تفسیر کبیر، 152/1)

(2) दर्दे सर का इलाज

जन्नती सह़ाबी, मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को क़ैसरे रूम ने ख़त़ लिखा कि मुझे दाइमी (या'नी लगातार) दर्दे सर की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा (Medicine) हो तो भेज दीजिये ! ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस को एक टोपी भेज दी क़ैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का दर्दे सर काफ़ूर (या'नी दूर) हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता। उसे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक काग़ज़ बरआमद हुवा जिस पर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم लिखा था।

(اسرار الفاتحہ، ص163، تفسیر کبیر، 1/155)

दर्दे दिल कर मुझे अ़त़ा या रब दे मेरे दर्द की दवा या रब

(3) नक्सीर फूटने का इलाज

अगर किसी की नक्सीर फूट जाए और ख़ून बहने लगे तो शहादत की उंगली से पेशानी पर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم लिखना शुरूअ़ कर के नाक के आख़िर पर ख़त्म करे اِنْ شَآءَاللّٰہ ख़ून बन्द हो जाएगा।

(4) जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा

ह़ज़रते सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इन्सान के साज़ो सामान और मल्बूसात (या'नी लिबास) को जिन्नात इस्ति'माल करते हैं। लिहाज़ा तुम में से जब कोई शख़्स कपड़ा (पहनने के लिये)

उठाए या (उतार कर) रखे तो ''बिस्मिल्लाह शरीफ़'' पढ़ लिया करे। उस के लिये **अल्लाह** पाक का नाम मोहर है। (या'नी बिस्मिल्लाह पढ़ने से जिन्नात उन कपड़ों को इस्ति'माल नहीं करेंगे।)

(کِتَابُ الْعَظْمہ، ص426، حدیث:1123)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ हर चीज़ रखते उठाते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ने की आ़दत बनानी चाहिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ शरीर जिन्नात की दस्त बुर्द से ह़िफ़ाज़त ह़ासिल होगी।

(5) दुश्मनी ख़त्म करने का वज़ीफ़ा

अगर पानी पर 786 मरतबा بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर मुख़ालिफ़ (या'नी दुश्मन) को पिला दें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ वोह मुख़ालफ़त छोड़ देगा और मह़ब्बत करने लगेगा और अगर मुवाफ़िक़ (या'नी दोस्त) को पिला दें तो मह़ब्बत बढ़ जाएगी। (जन्नती ज़ेवर, स. 578)

(6) मरज़ से शिफ़ा का वज़ीफ़ा

जिस दर्द या मरज़ पर तीन रोज़ तक सो मरतबा بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم हुज़ूरे दिल से (या'नी ख़ूब दिल लगा कर) पढ़ कर दम किया जाए اِنْ شَآءَاللّٰہ इस से आराम हो जाएगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 579)

(7) चोर और अचानक मौत से ह़िफ़ाज़त

अगर रात को सोते वक़्त 21 मरतबा بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ लें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ माल व अस्बाब चोरी से मह़फ़ूज़ रहेंगे और मर्गे ना गहानी (या'नी अचानक मौत) से भी ह़िफ़ाज़त होगी। (जन्नती ज़ेवर, स. 579)

(8) आफ़तें दूर होने का आसान विर्द

मौला मुश्किल कुशा जन्नती सहाबी हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अ़ली ! मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न बता दूं जिन्हें तुम मुसीबत के वक़्त पढ़ लो।'' अ़र्ज़ किया : ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये ! आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरी जान क़ुरबान ! तमाम अच्छाइयां मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही से सीखी हैं। इर्शाद फ़रमाया : ''जब तुम किसी मुश्किल में फंस जाओ तो इस त़रह़ पढ़ो : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ पस **अल्लाह** इस की बरकत से जिन बलाओं को चाहेगा दूर फ़रमा देगा।'' (عَمَلُ الْیَوْمِ وَاللَّیْلَۃ لابن سُنّی، ص۱۲۰)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी बीमारी, क़र्ज़दारी, मुक़द्दमा बाज़ी, **दुश्मन** की त़रफ़ से ईज़ा रसानी, बे रोज़गारी या कोई सी भी आफ़ते ना गहानी आन पड़े। कोई चीज़ **गुम** हो जाए, किसी की बात सुन कर **सदमा** पहुंचे, कोई मारे, दिल **दुख** जाए, **ठोकर** लगे, गाड़ी ख़राब हो जाए, **ट्राफ़िक** जाम हो जाए, कारोबार में **नुक़्सान** हो जाए, **चोरी** हो जाए अल ग़रज़ छोटी या बड़ी कोई सी भी परेशानी हो। بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ पढ़ते रहने की आ़दत बना लीजिये। निय्यत साफ़ होगी तो اِنْ شَآءَاللّٰہ ! मन्ज़िल आसान होगी।

अ़फ़्व फ़रमा ख़त़ाएं मेरी ऐ अ़फ़ू शौक़ो तौफ़ीक़ नेकी का दे मुझ को तू
जारी दिल कर कि हर दम रहे ज़िक्रे हू आ़दते बद बदल और कर नेक ख़ू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

"मग़्फ़िरत" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से इस्तिग़्फ़ार करने के 5 फ़ज़ाइल

(1) दिलों के ज़ंग की सफ़ाई

जन्नती सहाबी, ख़ादिमुन्नबी, हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : बेशक लोहे की तरह दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और इस की जिला (या'नी सफ़ाई) इस्तिग़्फ़ार करना है। (مجمع الزوائد ج۱۰ص۳۴۶حدیث۱۷۵۷۵)

(2) परेशानियों और तंगियों से नजात

सहाबी इब्ने सहाबी, जन्नती इब्ने जन्नती हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने इस्तिग़्फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया **अल्लाह** पाक उस की हर परेशानी दूर फ़रमाएगा और हर तंगी से उसे राहत अ़ता फ़रमाएगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।

(سُنَن ابن ماجہ ج۴ص۲۵۷حدیث۳۸۱۹)

(3) ख़ुश करने वाला आ'माल नामा

जन्नती सहाबी, हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो इस बात को पसन्द करता है कि उस का नामए आ'माल उसे ख़ुश करे तो उसे चाहिये कि उस में इस्तिग़्फ़ार का इज़ाफ़ा करे।

(مجمع الزوائد ج۱۰ص۳۴۷حدیث۱۷۵۷۹)

(4) ख़ुश ख़बरी !

जन्नती सह़ाबी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो अपने नामए आ'माल में इस्तिग़्फ़ार को कसरत से पाए। (سُنَن ابن ماجہ، ج۴ص۲۵۷حدیث۳۸۱۸)

(5) सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार की फ़ज़ीलत

जन्नती सह़ाबी, ह़ज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार है :

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَھْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं तू ने मुझे पैदा किया मैं तेरा बन्दा हूं और ब क़दरे त़ाक़त तेरे अ़ह्दो पैमान पर क़ाइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी ने'मत का जो मुझ पर है इक़्रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।

जिस ने इसे दिन के वक़्त ईमानो यक़ीन के साथ पढ़ा फिर उसी दिन शाम होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नती है और जिस ने रात के वक़्त इसे ईमानो यक़ीन के साथ पढ़ा फिर सुब्ह़ होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नती है।

(صَحِیحُ البُخَارِیّ، ج۴ص۱۹۰حدیث۶۳۰۶)

''बिस्मिल्लाह'' से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शर्ई मसाइल

उ़लमाए किराम ने ''बिस्मिल्लाह'' से मुतअ़ल्लिक़ बहुत से शर्ई मसाइल बयान किये हैं, उन में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं :

(1) जो ''बिस्मिल्लाह'' हर सूरत के शुरूअ़ में लिखी हुई है, येह पूरी आयत है और जो ''सूरए नम्ल'' की आयत नम्बर 30 में है वोह उस आयत का एक हिस्सा है ।

(2) ''बिस्मिल्लाह'' हर सूरत के शुरूअ़ की आयत नहीं है बल्कि पूरे क़ुरआन की एक आयत है जिसे हर सूरत के शुरूअ़ में लिख दिया गया ताकि दो सूरतों के दरमियान फ़ासिला हो जाए, इसी लिये सूरत के ऊपर इम्तियाज़ी शान में ''बिस्मिल्लाह'' लिखी जाती है आयात की त़रह़ मिला कर नहीं लिखते और इमाम जह्‌री नमाज़ों (या'नी वोह नमाज़ें जिन में इमाम बुलन्द आवाज़ में क़िराअत करता है ।) में ''बिस्मिल्लाह'' आवाज़ से नहीं पढ़ता, नीज़ ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام जो पहली वह़ी लाए उस में ''بِسْمِ اللّٰهِ'' न थी ।

(3) तरावीह़ पढ़ाने वाले को चाहिये कि वोह किसी एक सूरत के शुरूअ़ में ''बिस्मिल्लाह'' आवाज़ से पढ़े ताकि एक आयत रह न जाए ।

(4) तिलावत शुरूअ़ करने से पहले ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم'' पढ़ना सुन्नत है, लेकिन अगर शागिर्द उस्ताद से क़ुरआने मजीद पढ़ रहा हो तो उस के लिये सुन्नत नहीं । (सिरातुल जिनान, 1/42)

''बिस्मिल्लाह कीजिये'' कहना मम्नूअ़ है

बा'ज़ लोग इस त़रह़ कह देते हैं : ''बिस्मिल्लाह कीजिये !'' ''आओ जी बिस्मिल्लाह !'' ''मैं ने बिस्मिल्लाह कर डाली'', ताजिर

ह़ज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उ़मूमन ''**बोनी**'' कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग इस को भी ''बिस्मिल्लाह'' कहते हैं, मसलन ''मेरी तो आज अभी तक बिस्मिल्लाह ही नहीं हुई !'' जिन जुम्लों की मिसालें पेश की गईं येह सब ग़लत़ अन्दाज़ हैं। इसी त़रह़ खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्सर खाने वाला उस से कहता है : आइये आप भी खा लीजिये, आ़म त़ौर पर जवाब मिलता है : ''बिस्मिल्लाह'' या इस त़रह़ कहते हैं : ''बिस्मिल्लाह कीजिये !'' **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 32 पर है : इस मौक़अ़ पर इस त़रह़ बिस्मिल्लाह कहने को उ़लमा ने बहुत सख़्त मम्नूअ़ क़रार दिया है। हां येह कह सकते हैं : बिस्मिल्लाह पढ़ कर खा लीजिये। बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर दुआ़इया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, मसलन بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ या'नी **अल्लाह** पाक हमें और तुम्हें बरकत दे। या अपनी मादरी ज़बान में कह दीजिये : **अल्लाह** पाक बरकत दे।

बिस्मिल्लाह कहना कब सुन्नत है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हर अहम काम जैसे खाने पीने वग़ैरा के शुरूअ़ में ''**बिस्मिल्लाह**'' पढ़ना सुन्नत है और नमाज़ में सूरए फ़ातिह़ा व सूरत के दरमियान, और उठते बैठते के वक़्त ''**बिस्मिल्लाह**'' पढ़ना जाइज़ व मुस्तह़सन है। जब कि ख़ारिजे नमाज़ दरमियाने सूरत से तिलावत की, इब्तिदा के वक़्त ''**बिस्मिल्लाह**'' पढ़ना मुस्तह़ब है और सूरए तौबह के दरमियान से पढ़ते वक़्त भी येही ह़ुक्म है।

(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, 2/506)

बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है ?

ह़राम व ना जाइज़ काम से क़ब्ल बिस्मिल्लाह शरीफ़ हरगिज़,

हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए कि ''**फ़तावा आ़लमगीरी**'' में है : शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त या जूआ खेलते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना कुफ़्र है। (فتاوی عالمگیری، ج۲ص۲۷۳)

कच्ची पियाज़ खाते वक़्त बिस्मिल्लाह मत पढ़िये

फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल जिल्द 2 सफ़हा 506 पर है : हुक़्क़ा, बीड़ी, सिगरेट पीने और (कच्चे) लहसन, पियाज़ जैसी चीज़ खाने के वक़्त और नजासत की जगहों में बिस्मिल्लाह पढ़ना मक्रूह है।

अह़कामे शर्अ़ पर मुझे दे दे अ़मल का शौक़ पैकर ख़ुलूस का बना या रब्बे मुस्त़फ़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अपनी दुन्या व आख़िरत संवारने और रिज़ाए मौला पाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के प्यारे प्यारे दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतें सीखने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये और ह़क़ीक़ी मा'नों में आ़शिक़े रसूल और नेक मुसल्मान बनने के लिये ''नेक आ'माल'' का रिसाला पुर कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने नेक मुसल्मान बनने के लिये नेकियां करने और गुनाहों से बचने वाले कई कामों पर मुश्तमिल येह रिसाला अ़त़ा फ़रमाया है और इस के अन्दर सुवाल नम्बर 46 में ''हर जाइज़ काम'' से पहले ''बिस्मिल्लाह'' शरीफ़ पढ़ने की तरग़ीब मौजूद है। **अल्लाह** पाक हमें सुन्नतों पर अ़मल करने, दूसरों को सुन्नतें सिखाने और इस की नेकी की दा'वत को आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم

करूं बे लौस ख़िदमत सुन्नतों की शहा गर लुत्फ़ मुझ पर आप का हो
मैं मदनी क़ाफ़िलों ही का मुसाफ़िर रहूं अक्सर करम ऐसा शहा हो

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का एक अहम फ़तवा

क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर्‌ए मतीन इस मस्अले के बारे में कि आज कल घरों में अटेच बाथ होते हैं और उसी में लोग वुज़ू भी करते हैं तो सुवाल येह है कि वुज़ू से पहले ऐसे अटेच बाथ में बिस्मिल्लाह शरीफ़ नीज़ दौराने वुज़ू की दुआ़एं व वज़ाइफ़ पढ़ सकते हैं कि नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

उ़मूमी त़ौर पर ऐसे बाथरूम और टोयलेट के दरमियान कोई दीवार, या बड़ा दरवाज़ा वग़ैरा इस अन्दाज़ में नहीं लगा होता कि जिस के सबब दोनों मक़ाम अलग अलग शुमार हों लिहाज़ा ऐसे अटेच बाथ में वुज़ू करने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ या दौराने वुज़ू पढ़ी जाने वाली दुआ़एं, वज़ाइफ़ नहीं पढ़ सकते और अगर अटेच बाथ इस अन्दाज़ से बना हुवा हो कि टोयलेट और बाथरूम के दरमियान कोई दीवार, दरवाज़ा या फिर लोहे या लकड़ी की चादर (Sheet) लगा दी जाए कि टोयलेट और बाथरूम जुदा जुदा हैसिय्यत इख़्तियार कर जाएं तो अब बाथरूम में वुज़ू करते हुए ज़िक्रो वज़ाइफ़ और दुआ़एं पढ़ सकते हैं कि अब येह मौज़ए नजासत नहीं। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد